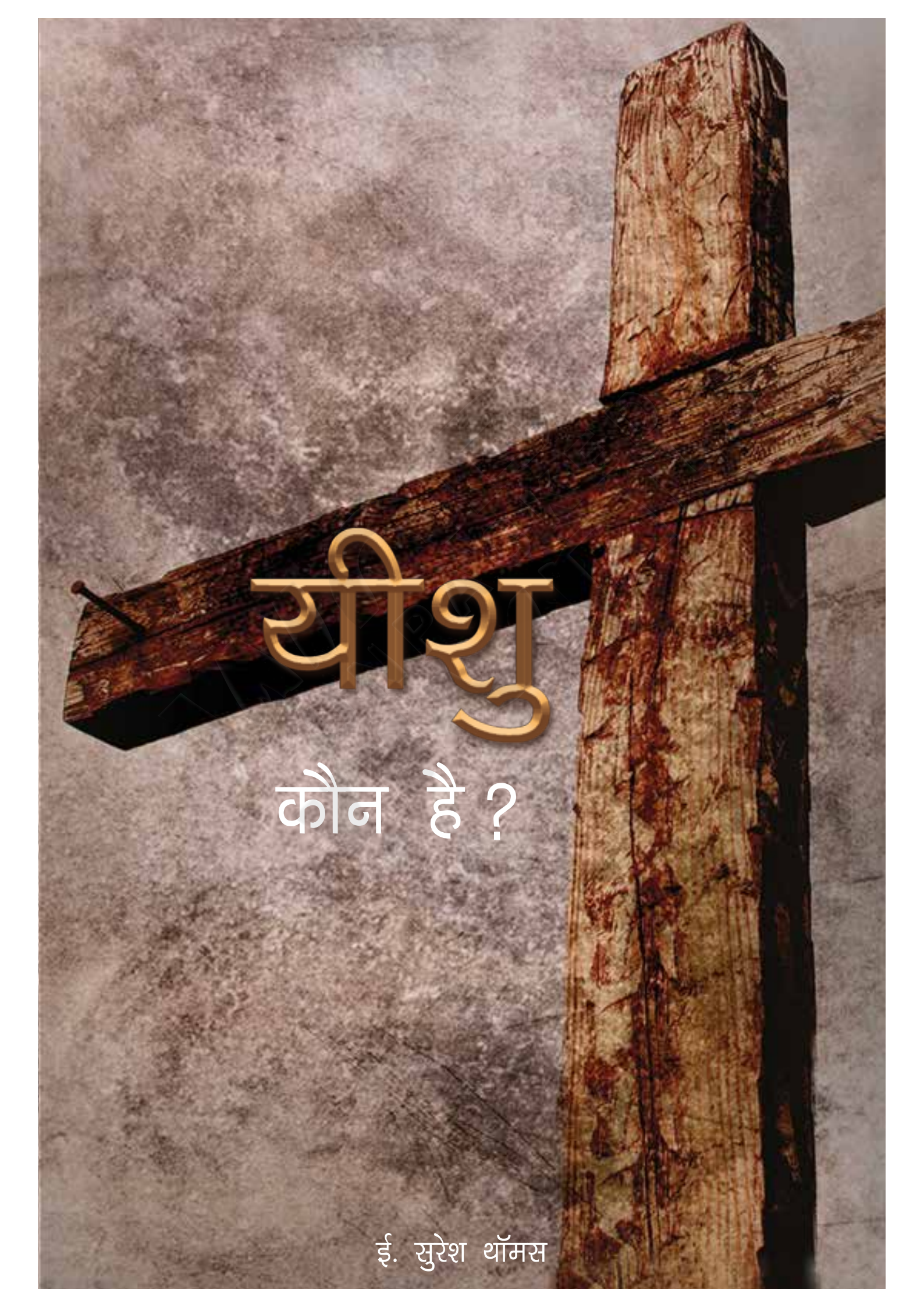


A wooden cross is positioned diagonally across the frame, set against a rough, grey, textured wall. The cross is made of two weathered wooden beams. The horizontal beam has a small nail visible on its left end. The vertical beam is positioned on the right side of the image. The text 'यीशु' is written in a golden, stylized font across the horizontal beam, and 'कौन है ?' is written in a white, sans-serif font below it.

यीशु

कौन है ?

ई. सुरेश थॉमस

WORD UNPACKED WORD

 YouTube : WORD UNPACKED

 Instagram : WORD UNPACKED



LIKE



SHARE

SUBSCRIBE



www.whoisjesus.faith

यीशु

कौन है ?

ई. सुरेश थॉमस

विषय सूची

परिचय : यीशु कौन है ?	1
अध्याय एक : मसीह का जन्म और पूर्व अस्तित्व	3
अध्याय दो : उसका पापरहित जीवन	25
अध्याय तीन : उसकी शिक्षाएँ	37
अध्याय चार : उसके आश्चर्यकर्म	53
अध्याय पाँच : उसकी मृत्यु	77
अध्याय छः : उसका पुनरुत्थान	95
अध्याय सात : उसका दूसरा आगमन	109
निष्कर्ष : मुझे क्या करना चाहिए ?	127

UNPACKED

परिचय

यीशु कौन है ?



बाइबल एक ऐसी ऐतिहासिक पुस्तक है जिसमें जगत की उत्पत्ति से लेकर अन्तिम समय तक की घटनाओं का विवरण लिखा है।

बाइबल की पहली पुस्तक, उत्पत्ति इस वचन से शुरू होती है, “आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।” परमेश्वर अनन्त है और वह सर्व-सामर्थी, सर्व-उपस्थित और सर्वज्ञानी है। उसने अपने शब्द मात्र से सब वस्तुओं की सृष्टि की है।

हम आगे पढ़ते हैं कि कैसे परमेश्वर ने उन सारी वस्तुओं को बनाया, जिन्हें हम अपने आसपास देखते हैं। उसने वनस्पति, पौधे, मछलियाँ, मवेशी, वन-पशु, आकाश के पक्षी और जो भी हम पृथ्वी पर देखते हैं सब बनाया है। उत्पत्ति की पुस्तक इस सृष्टि को रचे जाने का वर्णन करती है। परमेश्वर ने एक श्रेष्ठ रचनाकार के रूप में, मनुष्य को रचने से पहले उसके लिए भोजन-वस्तु का प्रावधान किया। परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अपने स्वरूप में रचा और उन्हें अदन नामक एक वाटिका में रखा। उसने उनको आशीष दी और यह आज्ञा दी कि फूलों-फलों और इस पृथ्वी में भर जाओ। परमेश्वर ने उन्हें सारी सृष्टि पर अधिकार दिया और वाटिका की देखभाल करने को कहा।

वे वाटिका के किसी भी फल को खा सकते थे परन्तु उन्हें “भले और बुरे के ज्ञान का फल” खाने की मनाही थी। उन्हें इस पेड़ के फल से खाने के परिणाम के विषय में चेतावनी दी गई थी। उन्हें बताया गया था कि जिस दिन वे उस वृक्ष का फल खाएँगे, वे मर जायेंगे। हव्वा उस शैतान के द्वारा बहकायी

और छली गई जो स्वर्ग से गिराया गया स्वर्गदूत था और साँप का रूप धारण करके आया था। हव्वा ने फल खाया और अपने पति आदम को भी खिलाया।

उनकी इस अनाज्ञाकारिता के परिणामस्वरूप, जिसे बाइबल “पाप” कहती है, मृत्यु ने प्रवेश किया। परमेश्वर से अलगाव के रूप में मृत्यु जिसमें शारीरिक मृत्यु भी शामिल है, सभी मानवजाति में फैल गई। परमेश्वर का शत्रु शैतान, अस्थायी रूप से परमेश्वर की सुन्दर सृष्टि को नाश करने की अपनी योजना में कामयाब हो गया। पाप इन भयानक परिणामों को लेकर आया, परन्तु परमेश्वर ने एक उद्धारकर्ता का वादा किया था।

परमेश्वर ने साँप से उत्पत्ति 3:15 में कहा कि, ‘मैं तेरे और इस स्त्री के बीच में, और तेरे वंश और इसके वंश के बीच में बैर उत्पन्न करूँगा; वह तेरे सिर को कुचल डालेगा, और तू उसकी एड़ी को डसेगा।’ मसीह (अभिषिक्त) का जन्म एक स्त्री से होगा और वह एक दिन साँप के सर को कुचल डालेगा। दूसरे शब्दों में, वह शैतान का और जो कुछ उसने मनुष्य के पतन से प्राप्त किया है उसका नाश कर डालेगा।

बाइबल कहती है: “परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए” (यूहन्ना 3:16)। बाइबल ये प्रकट करती है कि अनन्त परमेश्वर तीन व्यक्तित्व में है: परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, परमेश्वर पवित्र आत्मा। परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह का जन्म 2000 वर्ष पूर्व इस्राएल देश में हुआ।

बहुत से लोगों ने यीशु मसीह की विशिष्टता की जाँच की है और उसके जीवन पर अनगिनत पुस्तकें लिखी जा चुकी हैं। बाइबल, यीशु के विषय में कई दावे करती है और उसके जीवन, मृत्यु, और पुनरुत्थान के प्रमाणों को प्रस्तुत करती है। हम इन बातों को अनदेखा या हल्के में नहीं ले सकते। इस विषय में सही समझ कि यीशु मसीह कौन है, हमारी मंजिल को बदल सकता है।

इस अध्ययन का उद्देश्य आपको इस बात में सशक्त करना है कि आप पवित्र वचन की व्यक्तिगत रीति से खोजबीन करें और एक निष्कर्ष पर आएँ।

हमें स्वयं सत्य को खोजना चाहिए और सत्य हमें स्वतंत्र करेगा।

अध्याय एक

मसीह का जन्म और पूर्व अस्तित्व

करोड़ों लोग जो इस पृथ्वी पर जन्म लेते हैं, वे जीते और मर जाते हैं। ऐसा क्या है जो किसी व्यक्ति के जन्म को विशिष्ट बनाता है? क्या कोई व्यक्ति अपने जन्म का समय, स्थान या परिवार निर्धारित कर सकता है? इस अध्याय में हम यीशु मसीह के जन्म और उसके मूल पर गौर करेंगे और देखेंगे कि बाइबल के दावे के अनुसार किस प्रकार वह हम सबसे भिन्न है।

अतिरिक्त जानकारी : यशायाह नबी की पुस्तक प्राचीन यहूदी धर्मशास्त्र का भाग थी और उसे यीशु के जन्म से 700 वर्ष पूर्व लिखा गया था। इस पुस्तक में यशायाह नबी ने आनेवाले मसीहा के जन्म, जीवन, मृत्यु, गाड़े जाने और पुनरुत्थान के विषय में भविष्यवाणी की थी।

खोजें :

यशायाह 7:14 और 9:6-7 के इन पदों को पढ़ें।

- **पुत्र और बालक** समेत आने वाले मसीह के सभी उल्लेखों पर क्रूस का निशान लगाएँ : ✝ । बाइबल पर विशिष्ट रूप से निशान लगाने से हमें धीरे-धीरे आगे बढ़ने और मुख्य शब्दों पर ध्यान देने में सहायता मिलती है।

यशायाह 7:14

14 इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिह्न देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल (ध्यान रखें : इम्मानुएल का अर्थ है “परमेश्वर हमारे साथ”) रखेगी।

यशायाह 9:6-7

- 6 क्योंकि हमारे लिए एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके काँधे पर होगी, और उसका नाम अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा।
- 7 उसकी प्रभुता सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उसकी शान्ति का अन्त न होगा, इसलिये वह उसको दाऊद की राजगद्दी पर इस समय से लेकर सर्वदा के लिये न्याय और धर्म के द्वारा स्थिर किए और सम्भाले रहेगा। सेनाओं के यहोवा की धुन के द्वारा यह हो जाएगा।

एक बार फिर यशायाह 7:14 और 9:6-7 को पढ़ें, और इस बार...

- प्रभुता, राजगद्दी और इनके सर्वनामों पर मुकुट का निशान लगाएँ: 
- समय के हर संदर्भ, जैसे अनन्तकाल, अन्त न होगा, सर्वदा पर गोला बनाएँ:

स्वयं विचार करें अथवा समूह में चर्चा करें, और फिर अपने उत्तर नीचे लिख लें :

- कुमारी से जन्मे पुत्र को दिए गए नाम और उपाधियाँ क्या हैं ?
- यशायाह 9 में उसकी प्रभुता और राज्य की विशेषताओं को बताने के लिए कौन से शब्दों का प्रयोग किया गया है ?
- यह सब कैसे होगा ? (यशायाह 9:7 पढ़ें)



खोजें :

परमेश्वर ने राजा दाऊद से, जो यीशु का पूर्वज था, यह प्रतिज्ञा की कि उसका राज्य अनंतकाल का होगा और उसका कभी अंत नहीं होगा (2 शमूएल 7:12-17)।

हमने यशायाह में जो पढ़ा था, उसके अनुसार एक मसीहा जो कुमारी से जन्म लेगा, वह दाऊद के राज्य पर सर्वदा राज करेगा।

अब हम इस भविष्यवाणी के पूरा होने के विषय में पढ़ेंगे। यीशु का जन्म मरियम नामक एक कुंवारी से हुआ। लूका, जो चार सुसमाचार लेखकों में से एक था, अपने लेख में इस घटना का विवरण देता है।

आइए लूका 1:26-35, 2:1-11 को पढ़ें।

- **पुत्र**, वह पवित्र जो **उत्पन्न होनेवाला है**, समेत **यीशु** के सभी सन्दर्भों पर क्रूस का निशान लगाएँ : †

लूका 1:26-35

- 26 छठवें महीने में परमेश्वर की ओर से जिब्राईल स्वर्गदूत, गलील के नासरत नगर में,
- 27 एक कुंवारी के पास भेजा गया जिसकी मंगनी यूसुफ नामक दाऊद के घराने के एक पुरुष से हुई थी: उस कुंवारी का नाम मरियम था।
- 28 स्वर्गदूत ने उसके पास भीतर आकर कहा, “आनन्द और जय तेरी हो, जिस पर ईश्वर का अनुग्रह हुआ है! प्रभु तेरे साथ है!”
- 29 वह उस वचन से बहुत घबरा गई, और सोचने लगी कि यह किस प्रकार का अभिवादन है ?
- 30 स्वर्गदूत ने उससे कहा, “हे मरियम, भयभीत न हो, क्योंकि परमेश्वर का अनुग्रह तुझ पर हुआ है।
- 31 देख, तू गर्भवती होगी, और तेरे एक पुत्र उत्पन्न होगा; उसका नाम यीशु रखना।
- 32 वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा,

- 33 और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्त न होगा।”
- 34 मरियम ने स्वर्गदूत से कहा, “यह कैसे होगा। मैं तो पुरुष को जानती ही नहीं।”
- 35 स्वर्गदूत ने उसको उत्तर दिया, “पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी; इसलिये वह पवित्र जो उत्पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।

लूका 2:1-11

- 1 उन दिनों में औगूस्तस कैसर की ओर से आज्ञा निकली, कि सारे जगत के लोगों के नाम लिखे जाएँ।
- 2 यह पहली नाम लिखाई उस समय हुई, जब क्विरिनियस सूरिया का हाकिम था।
- 3 सब लोग नाम लिखवाने के लिये अपने अपने नगर को गए।
- 4 अतः यूसुफ भी इसलिये कि वह दाऊद के घराने और वंश का था, गलील के नासरत नगर बैतलहम को गया,
- 5 कि अपनी मंगेतर मरियम के साथ जो गर्भवती थी नाम लिखवाए।
- 6 उनके वहां रहते हुए उसके जनने के दिन पूरे हुए,
- 7 और वह अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसे कपड़े में लपेटकर चरनी में रखा: क्योंकि उनके लिये सराय में जगह न थी।
- 8 और उस देश में कितने गड़ेरिये थे, जो रात को मैदान में रहकर अपने झुण्ड का पहरा देते थे।

8 | यीशु कौन है ?

- 9 और प्रभु का एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ, और प्रभु का तेज उनके चारों ओर चमका, और वे बहुत डर गए।
- 10 तब स्वर्गदूत ने उनसे कहा, “मत डरो; क्योंकि देखो, मैं तुम्हें बड़े आनन्द का सुसमाचार सुनाता हूँ जो सब लोगों के लिये होगा।
- 11 कि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिये एक उद्धारकर्ता जन्मा है, और यही मसीह प्रभु है।

लूका 1:26-35 और 2:1-11 को एक बार फिर पढ़ें, और इस बार...

- सिंहासन और राज्य शब्दों पर मुकुट का निशान लगाएँ : 
- (समय) के हर संदर्भ, जैसे सदा, अन्त न होगा पर गोला बनाएँ।

स्वयं विचार करें अथवा समूह में चर्चा करें, और फिर अपने उत्तर नीचे लिख लें :

- यीशु पर निशान लगाकर और ध्यान देकर आपने क्या सीखा ?
- आप उसके राज्य के फैलाव के बारे में क्या सीखते हैं ? समय के संदर्भों को ध्यान से देखें।

- लूका 1:34 के अनुसार मरियम की चिंता क्या थी? स्वर्गदूत ने उसकी चिंता का जवाब कैसे दिया?
- किस प्रकार यीशु हमारी तुलना में विशिष्ट है?
- यशायाह 7:14 और 9:6-7 की उन भविष्यवाणियों के पूरे होने पर ध्यान दें, जिन्हें आपने पहले भाग में पढ़ा था। कौन सी भविष्यवाणी पूरी हुई और कौन सी नहीं?



आइए हम आगे पढ़कर देखें कि इस मसीह के बारे में वचन क्या कहता है।

खोजें

यूहन्ना 1:1-3, 14-17 और कुलुस्सियों 1:13-17 को पढ़ें और...

- **वचन, एकलौता, पुत्र** समेत यीशु के सब संदर्भों पर क्रूस का निशान लगाएँ : †
- (समय) के हर संदर्भ, जैसे **आदि, बाद, पहिलौठा, प्रथम**, पर गोला लगाएँ।

यूहन्ना 1:1-3, 14-17

- 1 आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।
- 2 यही आदि में परमेश्वर के साथ था।
- 3 सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ, और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उसमें से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न नहीं हुई।
- 14 और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया, और हम ने उसकी ऐसी महिमा देखी, जैसी पिता के एकलौते की महिमा।
- 15 यूहन्ना ने उसके विषय में गवाही दी, और पुकारकर कहा, “यह वही है, जिसका मैंने वर्णन किया कि जो मेरे बाद आ रहा है, वह मुझ से बढ़कर है क्योंकि वह मुझ से पहले था।”
- 16 क्योंकि उसकी परिपूर्णता में से हम सब ने प्राप्त किया अर्थात् अनुग्रह पर अनुग्रह।
- 17 इसलिये कि व्यवस्था तो मूसा के द्वारा दी गई, परन्तु अनुग्रह और सच्चाई यीशु मसीह के द्वारा पहुँची।

कुलुस्सियों 1:13-17

- 13 उसी ने हमें अन्धकार के वश से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य में प्रवेश कराया,
- 14 जिस में हमें छुटकारा अर्थात् पापों की क्षमा प्राप्त होती है।
- 15 वह तो अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप और सारी सृष्टि में पहिलौठा है।
- 16 क्योंकि उसी में सारी वस्तुओं की सृष्टि हुई, स्वर्ग की हो अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, क्या सिंहासन, क्या प्रभुताएँ, क्या प्रधानताएँ, क्या अधिकार, सारी वस्तुएँ उसी के द्वारा और उसी के लिये सृजी गई हैं।
- 17 वही सब वस्तुओं में प्रथम है, और सब वस्तुएँ उसी में स्थिर रहती हैं।

स्वयं विचार करें अथवा समूह में चर्चा करें, और फिर अपने उत्तर नीचे लिख लें:

- यीशु से जुड़ें उल्लेखों पर निशान लगाकर आपने क्या सीखा ?
- यूहन्ना 1:3 के अनुसार कौन सब वस्तुओं का रचनेवाला है ?
- हम यूहन्ना 1:14 में पढ़ते हैं कि वचन देहधारी हुआ और उसने हमारे बीच डेरा किया। यहाँ किसके बारे में जिक्र हो रहा है ?

- अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप कौन है ?
- स्वर्ग और पृथ्वी की वस्तुओं को कैसे और क्यों सृजा गया ?
- कुलुस्सियों 1:17 के अनुसार कौन पूरी सृष्टि को स्थिर रखता है ?

अतिरिक्त जानकारी: “पहिलौटे” का अर्थ “पहला सृजा हुआ” नहीं है। यद्यपि यीशु के पास मानवीय स्वभाव था, उसके ईश्वरीय स्वभाव को कभी सृजा नहीं गया; जैसा यूहन्ना ने कहा कि वह “आदि में था”, “परमेश्वर के साथ था,” और स्वयं “परमेश्वर था।”

इसके बाद की घटना में यीशु यहूदियों से बातचीत कर रहा है। अब्राहम जो यहूदियों के पूर्वज थे, वह यीशु के जन्म से लगभग 2000 साल पहले जीए और मर गए।

खोजें :

यूहन्ना 8:54-59 को पढ़ें और इन शब्दों पर निशान लगाएँ...

- अब्राहम के हर सन्दर्भ पर बड़ा सा **अ** लिखें।
- **यीशु** के सब सन्दर्भों और उसके सब सर्वनामों पर क्रूस का निशान लगाएँ : †

यूहन्ना 8:54-59

- 54 यीशु ने उत्तर दिया, “यदि मैं आप अपनी महिमा करूँ, तो मेरी महिमा कुछ नहीं; परन्तु मेरी महिमा करनेवाला मेरा पिता है, जिसे तुम कहते हो कि वह तुम्हारा परमेश्वर है।
- 55 तुमने तो उसे नहीं जाना : परन्तु मैं उसे जानता हूँ। यदि मैं कहूँ कि मैं उसे नहीं जानता, तो मैं तुम्हारी तरह झूठा ठहरूँगा; परन्तु मैं उसे जानता और उसके वचन पर चलता हूँ।
- 56 तुम्हारा पिता अब्राहम मेरा दिन देखने की आशा से बहुत मगन था; और उसने देखा और आनन्द किया।”
- 57 यहूदियों ने उससे कहा, “अब तक तू पचास वर्ष का नहीं, फिर भी तू ने अब्राहम को देखा है?”
- 58 यीशु ने उनसे कहा, “मैं तुम से सच सच कहता हूँ, कि पहले इसके कि अब्राहम उत्पन्न हुआ, मैं हूँ।”
- 59 तब उन्होंने उसे मारने के लिये पत्थर उठाए, परन्तु यीशु छिपकर मन्दिर से निकल गया।

अतिरिक्त जानकारी: “मैं हूँ” वह नाम है जिसका इस्तेमाल परमेश्वर ने उस समय किया था जब उसने जलती हुई झाड़ी में मूसा को दर्शन दिया था। मूसा जो यीशु मसीह से 1400 वर्ष पहले रहा, उसे परमेश्वर ने इस्राएल को मिस्र के दासत्व से छुड़ा लाने के लिए उपयोग किया। जब यीशु अपना परिचय “मैं हूँ” के रूप में देता है, तो वह वही परमेश्वर होने का दावा करता है, जो मूसा को जलती हुई झाड़ी में प्रकट हुआ था।

स्वयं विचार करें अथवा समूह में चर्चा करें, और फिर अपने उत्तर नीचे लिख लें :

- इन पदों में यीशु किस बात का दावा कर रहा था ? वह अपने बारे में क्या प्रकट कर रहा है ?

- यहूदियों ने यीशु के दावे का विरोध कैसे किया ?

- यीशु ने उनके विरोधों का जवाब कैसे दिया ?

- वचन 59 के अनुसार, आपको क्या लगता है कि, किस बात से यहूदी क्रोधित हुए होंगे कि उन्होंने यीशु को “मारने के लिये पत्थर उठाए ?”



खोजें :

इब्रानियों को पढ़ें 1:1-3, 10-12 और...

- पुत्र समेत यीशु के सभी संदर्भों पर क्रूस का निशान लगाएँ : †
- परमेश्वर पिता के हर संदर्भ पर त्रिकोण का निशान लगाएँ।

इब्रानियों 1:1-3, 10-12

- 1 पूर्व युग में परमेश्वर ने बापदादों से थोड़ा थोड़ा करके और भाँति-भाँति से भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा बातें कर,
- 2 इन अन्तिम दिनों में हम से पुत्र के द्वारा बातें कीं, जिसे उसने सारी वस्तुओं का वारिस ठहराया और उसी के द्वारा उसने सारी सृष्टि की रचना की है।
- 3 वह उसकी महिमा का प्रकाश और उसके तत्व की छाप है, और सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से संभालता है। वह पापों को धोकर ऊँचे स्थानों पर महामहिमन् के दाहिने जा बैठा;

(नीचे दिए गए पदों में परमेश्वर पिता अपने पुत्र से बात कर रहा है।)

- 10 और यह कि, “हे प्रभु, आदि में तू ने पृथ्वी की नींव डाली, और स्वर्ग तेरे हाथों की कारीगरी है।
- 11 वे तो नष्ट हो जाएँगे, परन्तु तू बना रहेगा; और वे सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएँगे,
- 12 और तू उन्हें चादर के समान लपेटेगा, और वे वस्त्र के समान बदल जाएँगे: पर तू वही है और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।”

स्वयं विचार करें अथवा समूह में चर्चा करें, और फिर अपने उत्तर नीचे लिख लें :

- पूर्व युग में परमेश्वर ने हमारे बापदादों (पूर्वजों) से कैसे बातें कीं ? अब वह हमसे किस तरह बातें करता है ?

- इन वचनों से हम यीशु के बारे में क्या सीखते हैं ?

- जब परमेश्वर ने सृष्टि को रचा तब यीशु कहाँ थे ?

- कौन सब वस्तुओं को संभाल रहा है और कैसे ?
- यीशु अब कहाँ है ?
- पृथ्वी की नींव किसने डाली और स्वर्ग किसके हाथों की कारीगरी है ?
- यीशु स्वर्ग और पृथ्वी के साथ क्या करेगा ?



अतिरिक्त जानकारी: सामान्यतः “वारिस” का अर्थ उस व्यक्ति से है जो कानूनी रूप से किसी व्यक्ति की मृत्यु पर उसकी सम्पत्ति या पद का उत्तराधिकारी होता है। हालाँकि, यहाँ जो पिता परमेश्वर ने यीशु मसीह को सब वस्तुओं के ऊपर वारिस ठहराया, वह इस तथ्य से जुड़ा है कि परमेश्वर ने यीशु के द्वारा ही समस्त सृष्टि को रचा। स्पष्ट है कि परमेश्वर ने मरकर अपने पुत्र के लिए मीरास नहीं छोड़ी। ये वचन यह भी बताते हैं कि यीशु सब वस्तुओं को अपनी सामर्थ्य के वचन से सम्भालता है, और यह कि उसने पापों को धोया और पिता के दाहिने हाथ जा बैठा। हम यीशु के व्यक्तित्व और कार्य के बारे में अगले अध्यायों में जानेंगे।

खोजे:

यूहन्ना 17:1-5 को पढ़ें और...

- पुत्र समेत यीशु के सब संदर्भों पर क्रूस का निशान लगाएँ: †।
- परमेश्वर पिता के हर सन्दर्भ पर त्रिकोण का निशान लगाएँ।

यूहन्ना 17:1-5

- 1 यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आँखें आकाश की ओर उठाकर कहा, “हे पिता, वह घड़ी आ पहुँची है; अपने पुत्र की महिमा कर कि पुत्र भी तेरी महिमा करे,
- 2 क्योंकि तू ने उसको सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उसको दिया है उन सब को वह अनन्त जीवन दे।
- 3 और अनन्त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें।
- 4 जो कार्य तू ने मुझे करने को दिया था, उसे पूरा करके मैं ने पृथ्वी पर तेरी महिमा की है।

- 5 अब हे पिता, तू अपने साथ मेरी महिमा उस महिमा से कर जो जगत की सृष्टि से पहले, मेरी तेरे साथ थी।

स्वयं विचार करें अथवा समूह में चर्चा करें, और फिर अपने उत्तर नीचे लिख लें:

- आपने इन पदों से यीशु के बारे में क्या सीखा ?
- आपने परमेश्वर पिता के बारे में क्या सीखा ?
- दूसरे पद में, यीशु क्या कहता है कि उसके पास था, वह उसे किसने दिया और वह उससे क्या करेगा ?
- तीसरे पद में, अनंत जीवन क्या है, इसके विषय में यीशु ने क्या कहा ?

- पद 5 में यीशु ने स्वयं के बारे में क्या दावा किया? क्या आप देख पा रहे हैं कि कैसे यह यीशु के बारे में पहले सीखी गई बातों से मेल खाता है?

आइए संक्षेप में देखें

इस अध्याय में हमने देखा कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है और उसे “इम्मानुएल” (परमेश्वर हमारे साथ) कहा गया है। हमने देखा कि भविष्य का शासन यीशु के काँधों पर होगा। उसका नाम “अद्भुत युक्ति करनेवाला पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार” है। यीशु की प्रभुता और शान्ति सर्वदा बढ़ती रहेगी, और उनका अन्त न होगा। उसका राज्य न्याय और धार्मिकता का होगा। वह पृथ्वी पर सदा-सर्वदा के लिए राज्य करेगा। हमने यह भी देखा कि आदि में वचन परमेश्वर के साथ था और सब कुछ उसके द्वारा अस्तित्व में आया। “सब कुछ” का अर्थ सृजी वस्तुएं हैं। वह महिमामय है और अनुग्रह तथा सच्चाई से परिपूर्ण है।

यीशु अदृश्य परमेश्वर का प्रतिरूप है और परमेश्वर की सब सृष्टि में पहिलौठा है। सृष्टि की सारी वस्तुएं, स्वर्ग की हों अथवा पृथ्वी की, देखी या अनदेखी, सब यीशु के द्वारा और यीशु के लिए रची गईं। वह सब वस्तुओं में प्रथम है, और उसी में सब वस्तुएँ स्थिर रहती हैं। यीशु ने स्वर्ग और पृथ्वी की नींव डाली है। समस्त सृष्टि के करोड़ों तारे और आकाश-गंगाएं उसके हाथ की कारीगरी हैं, और एक दिन वह उन्हें लपेट देगा। हम इस विषय में और अधिक अपने अंतिम अध्याय “**उसके दूसरे आगमन**” में पढ़ेंगे।

